(यात्रा-वृत्तांत)

मुजफ्फरपुर से भोपाल के रेल-जातरा

हम भोरहीं जल्दीये अपना जातरा के जुगार में लाग गइनी। एह जुगार में हमार मेहरारू, लड़िकन, साला-साली आ ढ़ेर लोग मन से लागल रहे; जवना में हमार सास-ससुर के भी मदद कम ना रहे काहे कि दमाद जे रहीं। साला पंकज साहिब के कृपा भइल कि उ अपना फटफटिया से हमरा के मुजफ्फर पुर जं. भोरही दस बजे बैशाली सुपरफास्ट (अप) एंक्सप्रेस पकड़वावे खातीर ले अइलन काहे कि गोरखपुर से हमरा कुशीनगर एक्सप्रेस से भोपाल जाये के रहे। बाकिर भइल उहे जवन ना होखे के चाहत रहे- गाड़ी आवे के इन्तजार। हम घरि-घरि पूछताछ खिड़की पर गाड़ी के बारे में पूछे खातीर जात रहीं बाकिर केहु, कुछुओ बतावे के तइयार ना रहे। अतने में भोंपू से केहू भीतर से कहलस जसहीं पूरब से आवे वाली गाड़ियन के कवनो सूचना मिली बतावल जायी। हम इ सुनते अपना शुभ-प्यारा साला से कहनी- ''लागता हई साला नाहके नइखे आइल? देख ई बात टी.वी. के समाचारन से कम नइखे, जइसे देखे-सुने के मिलेला कवनो दुर्घटना के घटला पर- ''छिट-फूट घटनाओं को छोड़कर स्थिति तनावपूर्ण पर नियंत्रण में है।'' जब छिट-फूट घटना घटिये गइल, तनाव बरले बा त नियंत्रण कइसन? एह बात से पहिले लागत रहे कि पूछ-ताछ खिड़की पर मातमी-शान्ति बा, कहीं कुछ जरूर भइल बा? जवना के केहू बतावे के नइखे चाहत। खिड़की के अगल-बगल के लोग कभी एक -दोसरा के देखे, कभी पटरी के देखे त कभी खिड़की ओरी!

हमनी खिड़की के लगहीं टकटकी लगा के बइठल रहीं काहे कि चिन्ता सतावत रहे कि कुशीनगर एक्सप्रेस से हमरा गोरखपुर से भोपाल जाये के रहे। हम सकते में रहीं कि हमार का होई? देरी हो गइल त आफत।

अपना प्राचार्य जी के का कहीं? बाट जोहत-जोहत अब हमरा गंजन होत रहे। अतने में हम देखनी एगो मेहरारू अपना दुध-मुहाँ बच्चा के चुप करावत रहे ऊ माने के तइयारे ना रहे तनिको चुप ना होत रहे। रेलगाड़ी से तनिको कम उहो ना छड़ियाइल रहे। एही बीचे पूछ-ताछ खिड़की के भीतर से एगो आदमी भोंपू से कहलस- ''अपरिहार्य कारणों से वैशाली सुपर फास्ट एक्सप्रेस टाटा-छपरा एक्सप्रेस गाड़ियाँ शाहपुर पटोरी होकर हाजीपुर जं0 जायेंगी, जिन यात्रियों को गोरखपुर, लखनउ, कानपुर के रास्ते नई दिल्ली तक की यात्रा बैशाली सुपर फास्ट (अप) एक्सप्रेस से करनी हो वे दरभंगा से आने वाली तथा हाजीपुर, छपरा, सिवान, भटनी, वाराणसी के रास्ते जाने वाली सरयु-यमुना एक्सप्रेस से हाजीपुर जं0 जाकर वैशाली सुपर फास्ट अप एक्सप्रेस से अपनी यात्रा प्रारंभ कर सकते हैं। सरयु-यमुना एक्सप्रेस के पहुँचने के बाद ही वैशाली एक्सप्रेस हाजी पुर से प्रस्थान करेगी।''

हम घबराइल मन से झट से पूछ-ताछ खिड़की लगे जाऽ के जाने के चाहत रहीं की का बात ? खिड़की के भीतर से एगो आदमी हकला के कहलस- ''दलसिंग सराय स्टेशन पर फिश प्लेटन के लोग खोल देले बा, रेल रोको अभियान चल रहल बा जवना के कारण गाड़ियन के राह बदल देहल गइल बा कि राही लोगन के गंजन मत होखे।'' अतना हकलाह आवाज सुनते ऊ मेहरारू अपना रोअत दुध मुँहा बचवा के लेके गोदी में झटक के खिड़की के लगे आइल आ पुछलस- ''भाई साहेब, दरभंगा जाये वाली गड़िया कब आयी?'' खिड़की-भीतर से ऊ कहलन- ''बऽऽ बऽ बहन जी जऽऽ जऽ जइसे ही सूचना मिऽऽ मिऽ मिलेगी बऽऽ बऽ बताया जायेगा।

वाह रे, खूब भइल- ओकर रोअत बचवा चूप।

तनी देर बाद उहे मेहरारू फेरू अपना रोअत लड़िकवा के गोदी में लेके रेलवे के ओही कर्मचारी के खोजत रहे जे हकला के बोलत रहलन। भेंटाते पुछलस- भाई जी, मोतीहारी वाली गड़िया कब आयी? रेलवे कर्मचारी कहलन- ''बऽऽबऽ बहन जी जऽऽ जऽ जइसे ही सूचना मिऽऽ मिऽ मिलेगी बताया जायेगा।''

वाह-भाई-वाह, फेरू खूबभइल-- ओकर गोदी में के दुध मुँहा बचवा जे रोअत रहे, हकलाइल आवाज सुन के फेरू चूप हो गइल। कुछही देरी के बाद ओकर लड़िकवा रोअत रहे त फेरू उ उनहीं के खोजत रहे; भेंटाते पुछलस- ''भाई साहेब, हाजीपुर जाये वाली गड़िया कब आयी।'' अतना सुनते रेलवे कर्मचारी गुस्साइल- ''कऽऽ कऽ कहा न अऽऽ अऽ अभी कोई सूचना नहीं मिली है।''

हम अचंभा में रहीं आखीर एकरा जाये के कहँवा बा? कि कबहीं इ मेहरारू दरभंगा, मोतीहारी त कबही हाजीपुर जाये वाली गड़ियन के बारे में जाने के चाहत बिया। ओकरा लगे जाके हम पुछनी-अपने के जाये के कहँवा बा? ऊ झट से कहली- ''कहीं ना।''

''हमार बहिना वैशाली एक्सप्रेस से बरौनी से आवत बारी, हम उनहीं के बाट जोहत बानी बाट जोहत-जोहत हमार आँख पीड़ागइल बा, आ हमार ई बेटा बा कि रोअते जाता भगवान के मर्जी ना कहीं कि हउ भाई जी जे हकलाके बोलतानी त इ उँहा के हकलाइल आवाज सुनके हँसे लागता आ तनी हमरो मनोरंजन हो जाता, समय कटता, मनो लागता, का कहीं हम?

हमरा साथे-साथे साला पंकज जी भी रहीं। हम उँहा के कवनो दोसरो गाड़ी के बारे में पता लगावे के कहनी। ऊ पता कऽ के बतवलें- ''जीजाजी, अब रउआ सप्तक्रान्ति एक्सप्रेस से मोतीहारी, नरकटिया गंज होके गोरखपुर चल जायीं ना त राउर गाड़ी कुशीनगर एक्सप्रेस छूट जाई। पता ना काहे दलसिंह सराय के लोग रेल गाड़ियन के रोकले बा लोग? कहीं हाँक के ना नू ले जायी लोग? ना जाने हमरा अइसन कतना लोग हर जगे हारान भइल होई लोग। का कवनो समस्या के समाधान इहे बा कि रेल गाड़ियन के चक्का जाम कइल जाव? संयोग त निमन बा कि एमें टायर-ट्युब नइखे ना त सबके पंचर कर दित लोग, फार दित लोग चाहे हवा निकाल दित लोग, आ रेलवे मंत्रालय सोंचत रह जाइत- ''आखीर कइल का जाव?''

अतने में भोंपू से एगो आदमी कहनी की- ''सप्तकान्ति एक्सप्रेस जो मुजफ्फर पुर से मोतीहारी, नरकटिया गंज, गोरखपुर के रास्ते नई दिल्ली तक जायेगी प्लेटफार्म न. तीन से प्रस्थान करेगी, यात्रीगण अपनी यात्रा; उचित टिकट लेकर उक्त गाड़ी में अपना स्थान ग्रहण कर सकते हैं।'' हमहुँ पंकज जी से गोरखपुर तक के टिकट मंगवइनी आ ओह गाड़ी में ज़ा के बइठ गइनी, गाड़ी तुरंते खुल गइल। एह राह से हमार गोरखपुर के पहिलका जातरा रहे। एह कारण से खिड़कियन से झाँक-झाँक के गोयेंड़ा अइसन खेतन में ईख के लहलहात फसल, जंगल-झाड़ कबो मन मोह लेत रहे; त कबो जगे-जगे सरकारी अचड़ा-पचड़ा में बन्द पड़ल चीनी मिल अपना खंडहर के इतिहास के बुलंदियन के दास्तान सुनावत रहे। चिनिया-बेदाम फोड़त-खात, चाय पियत आ खिड़कियन से झाँकत हम गोरखपुर साँझ के छः बजके पैंतालिस मिनट पर पहुँचनी। इहो गाड़ी इहाँ लगभग एक घंटा देरी से आइल। मरजी भगवान के- इहवाँ भोंपू से कहल जात रहे कि- ''वैशाली सुपर फास्ट अप एक्सप्रेस लगभग साढ़े चार घंटे विलंब से चल रही है, यात्रियों को हुइ असुविधा के लिए हमें खेद है।''

आज-काल्ह कतना निमन तरीका निकल आइल बा गरिआवेके- धन्यवाद, खेद है, सॉरी आदि शब्दन के प्रयोग नयका सभ्यता में फइल गइल बा- पसर

गइल बा। हमरा लागता कि एकनी के प्रयोग गरिआवला से तनिको कम नइखे। हमरे अइसन केहु भी राहगीर पर का गुजरत होई? केहु राहगीरे बता सकेला। का सरयु-यमुनासे हम अइतीं त हमरा वैशाली के बाद कुशीनगर एक्सप्रेस मिल जाइत? ना जाने अइसन केतना प्रश्न (सवाल) हमरा दिमाग में नाचत रहे।

अतने में हमार एगो पुरान संघतिया इयार भेंटाऽ गइलन, जेकरा छपरा जाये के रहे। शीत लहरी के कारण सब-के-सब रेल गाड़ी दिल्ली ओरी से छः से आठ घंटा के देरी से आवत रहे। हमनी दुनो इयार कॉफी लेनी हमार गाड़ी प्लेट फार्म न. तीन पर लागल रहे। हमनी बोगी संख्या एगारह खोजल शुरू कइनी, बड़ी पाछे बोगी पर खल्ली से लिखल रहे '' /11''। हम आपन सामान लेले- देले ओमे घुस गइनी। हमरा अइसन ओ बोगी के '' `/11'' समझ के बइठे वाला ढ़ेर लोग रहे। एगो टी.टी. ई. अइलन त टिकट देखते कहलन- ''यह '' `/11'' नहीं है, आपलोग इन्जिन के बाद और '' `/1'' के बीच वाले कोच में स्थान ग्रहण करें। हम त अधिक हारान नाभइनी बाकिर एगो बूढ़ आदमी जे बेमारो रहलन बड़ी हारान रहलें। इ इतर बात बा कि हमनी आदमियत के नाते उहाँ के भरपूर मदद कइनी आ उहाँ के बइठे के जगहा पर बइठा देहनी। कुशीनगर एक्सप्रेस सांझ के सवा आठ बजे गोरखपुर से खुलल त हम आ हमार इयार दूनो आदमी एक दूसरा के निमन आ सुख भ्रल जातरा खातीर भगवान के गोहरवनी। हमरा लागत रहे जइसे पहिलके कवर में माछी लउकल होखे। जेक्रर जनमे गलत भइल होखे ओकरा से निमन काम के कवन उम्मीद। जवना संस्था के नींवे गलत पड़ल होखे ओकर क्रिया-कलाप कइसन होई; जवना पार्टी के सरकार गलत ढ़ंग से बनल होखे, गद्दी हथिअवले होखे ओकरा से निमन काम के उम्मीदे कइल बेइमानी होई। बा नू सोंचे के बात? जवन गाड़ी सुरूये में देर से चलल होखे ऊ कहाँ ले समय पर पहुँची?

ड्राइवर सीटी बजा के गाड़ी के धीरे-धीरे, हॉले-हॉले, लाहे-लाहे आगे बढ़वलें। हमनीं इंजिन के सटले बाद वाला बोगी में रहीं ए से ड्राइवर के झंडी-सीटी सब लउकत आ सुनात रहे बाकिर गार्ड साहिब के अता-पता ना चलत रहे। हमार बर्थ न. चार रहे। हमरा सामने बइठल दू गो आदमी में से एक आदमी ओ.एन. जी.सी. आ दुसरका सेना के जवान रहन जइसन की ऊ लोग बतलवलस। रउआ कहाँ बानी, का करीले से बात-चित के श्री गणेश भइल, तबले हमनी के गाड़ी गोंडा पहुचे वाली रहे। हम आपन झोड़ा खोल के पूरी तरकारी, आम आ मिर्चा के आचार निकाल के ओह भाई लोगन से खाये के निहोरा कइनी। ऊ लोगन के-''नहीं, धन्यवाद'' कहते हम खाइल शुरू क देनी काहे की गोरखपुर स्टेशन पर भोंपू से कहल जात रहे- ''किसी भी अन्जान व्यक्ति से संपर्क नहीं बनायें, उसके द्वारा दिये गये खाने-पीने की वस्तुओं में आपको जहर या नशीली वस्तु दी जा सकती है जिससे आपको नुकसान हो सकता है।'' मानवीय आधार पर, आदमियत के नाते हम ओ लोगन के खाये के पूछले रहीं; ना जाने काहे? ..... का? .... कब? .... कहवाँ?

हम खाते रहीं तबले ऊ दूनो लोग आपुस में बतिअवलस-कानाफुसी कइलस, आ हमरा से पुछलस- ''सर, आप सादा पानी पीते हैं या रंगीन भी?'' हम पूछनीं -भाई जी रउआ लोगिन कहे के का चाहत बानी? साफ-साफ बतायीं। ओ. एन. जी. सी. वाला झट से कहलें-''ड्रींक्स चलेगा सर? क्योंकि हम लोग तो लेते हैं।'' आप भी चाहें तो शरीक हो सकते हैं।'' हम उनका साफ-साफ बता देनी- अरे भाई, हमरा ड्रींक्स ब्रींक्स ना चलेला, रउआ लोग आपन चलाईं। अतने में सेना के जवान आपन बैग खोलके एगो छोट चापुट बोतल निकाल के चाय वाला से दुगो थर्माकोल के गिलास मंगलन, आ फेरू अपना बैग से दु-चार गो सेव, अँगूर आ

हल्दी राम के भुँजिया के एगो पाकिट निकलन। ओ. एन. जी. सी. वाला गाड़ी से बहरी प्लेटफार्म पर गइलन आ पानी के एगो दू लीटर के बोतल बेसाह के ले अइलन। अब का? सब जोगार हो गइल, गिलास में पानी-शराब के ढारल, कबहुँ सेव-अंगूर त कबहुँ भुँजिया आ कबहुँ थर्माकोल के गिलास में ढ़ारल शराब-पानी ओह लोगन के होठ के लगे जात रहे आ मुँह चलत रहे। एही बीचे ऊ लोग आपस में कानाफुसी भी करत रहे आ दोसरो लोगन के अंदाजत रहे। हमरा त डर लागत रहे काहे कि रेलगाड़ी के सुतेवाला बोगी में शराब पियत हम पहिलका हाली देखत रहीं। लागत रहे कि ऊ दूनो लोग चोर-उच्चका हउअन? आखीर हम करिये का सकत रहीं? हमार खाना खतम हो गइल रहे। बर्थ न. पाँच पर एगो नेपाली भाई अपना जोरू के साथे रहलन। उनका इन्दौर जाये के रहे। इहो लोग आपन खाना निकाल के चट कर देहल लोग। हमरा लागत रहे कि हमरे अइसन इहो लोग शराबियन से डरात रहे। नेपाली भाई के जोरू के बर्थ '' `/6'' में रहे जवना से ऊ लोगन के गंजन होत रहे। उनका कहते हम ऊपर वाल बर्थ न. छः पर चल गइनी आ ऊ लोग हमरा बर्थ पर दुनो परानी आराम करे लागल लोग। हम अचम्भा में रहीं- अब त रेल गाडियन में भी शराब .... लोग बेरोक-टोक के पियतबा। सरकार गुटखा-सिगरेट के सेवन कइला पर जुर्माना के डुग-डुगी पिटवा देलस। केतना झूठ बात बा ई सब ...., जनता के बेवकूफ बनावे खातीर ना जाने अइसन कतना घोषणा होत रहे ला। हँ, एगो फायदा जरूर होला कि पुलिस के जवानन के ऊपरी आमदनी जरूर बढ़ जाला। हमरा त बुझाता कि पुलिस के जवानन के आमदनी बढ़ावे खतीर ही ई सब कइल जाला काहे कि पुलिस सरकार के एगो अंग ह कहल जा सकेला, ओकर आमदनी बढ़ावल भी सरकार के फरज होखहीं के चाहीं। एही से अइसन घोषणा कइल जाला। कइसन दुर्भाग्य बा हमनी के?

हम अपना के सुरक्षित महसूस ना करत रहीं; फिर भी अपना सुरक्षा के भार हम भगवान पर छोड़के कम्बल झोला से निकाल के ओढ़ लेनी बाकिर हमार नजर ओही पियक्कड़न पर रहे। ''भगवान पर जे भरोसा रखेला ओकर बालो बाँका ना होला'' साकार भइल। ऊ दूनो पियक्कड़ रेलगाड़ी के ही रफ्तार में धुन मिलाके खर्राटा खींचे लगलें। जब हमरा पूरा विश्वास हो गइल कि ई दुनो साचहुँ सुत गइलन त मन के घबराइल कम भइल। हमार अंघी त डरहीं भाग गइल रहे पर ना जाने कब हम सुत गइनी। गरम चाय .... गरम कॉफी .... कड़क चाय .... के आवाज सुनाये लागल त हमार अंघी टूट गइल, पुछला पर पता चलल की साढ़े पाँच बजे वाला बा; बाकिर शीत-लहरी के चलते आन्हार रहे। स्टेशन पर लोगन के भीड़-भाड़ आ बिजली-बत्ती के चलते तनी साफ लागत रहे। खिड़कियन पर शीत के बूंदन से लागत रहे कि जरूरे पानी बरसल होई। बड़ी ठंढ़ा लागत रहे। हम अपना बैग से स्वेटर आ गलाबंद निकाल के ठंढ़ा से बचे के उपाय कइनी। नित्यक्रिया से लौटत रहीं त जाड़े हमार हालत खराब हो चुकल रहे, ठंढ़ से बचे खातिर हम एगो कॉफी वाला के बुला के पाँच रू. में एक कप कॉफी लेनी। अफसोस! का इहे कॉफी कहाला-स्टेशन के? एक कप गर्म पानी से अधिका इ कुछओ ना रहे। तबो हमरा संतोष ओसहीं भइल जइसे कवनो शराबी के गिलास में पानी जादे आ शराब कम मिला के कवनो शाकी पिलावत होखे। हमरा एहू से संतोष भइल कि चल गरम पानी ही सही हमरा देह के कुछ गर्मी त मिलल, डुबत के तिनका सहारा मिलल। गप में ओ. एन. जी. सी. वाला बतवलें- लखनउ में त तापमान 20 सेंटीग्रेट हो गइल ह, इहाँ त तनी ठीको बा। ठंढ़ा के चलते अधिकतर लोग अभी सुतले रहे। हम फेरू ऊपर वाला बर्थ पर जाके सुत गइनी। अबकी हमरा नीमन अंघी लागल। जब हमार आँख खुलल त हमनी के

गाड़ी झाँसी पहुँचे वाला रहे, आ समय सवा दश बज चुकल रहे। नीचे के दूगो लोग बड़ी पड़ेशान रहे काहे कि ऊ लोगन के जूता चोरी हो गइल रहे। जब हम अपना समानन के देखलीं त राहत मिलल काहे कि हम अपना समानन के सीट के नीचा लागल तार में लगा के ताला लगा देले रहीं। जूता आ बैग चोरी के डरे बर्थ पर ही ऊपर अपना सिरहानी रख ले ले रहीं।

अतने में हमनी झाँसी आ गइनी, गाड़ी स्टेशन पर रूकल, सभे चाय-कॉफी आ नास्ता के स्वाद लेलस आ फास्टिंग के ब्रेकफास्ट से ब्रेक कइलस। हमहुँ नास्ता-चाय लेके झाँसी जं. के विदा कइनी। अब हमरा कॉलेज के चिन्ता सतावे लागल काहे कि आज कॉलेज में पहुँचे के उम्मीद कम ही लागत रहे आ जब हम समय पर ना पहुँचब त इतवार आ आज सोमार दूनों दिन के छुट्टी बिना पगार (तनखाह) के हो जाई, एकर माने कि कम-से-कम चार सौ रू. चल जाई। हमरा रूपयो के चिन्ता सतावे लागल। हम चाहत रहीं कि गाड़ी खूब तेज चलो जे हम जल्दी पहुँच जाईं कि कम-से-कम हाजिरी लग जाव। बाकिर भइल उहे जवन होखे के रहे। तुलसी दास जी रामचरित मानस में ठीकही लिखले बानीं-

''सुनहुँ भरत भावी प्रबल, विलखी कहेउ मुनि नाथ।
हानि-लाभ, जीवन-मरण, जश अपजश विधि हाथ।।''

भला कब-केकर चलल बा प्रभु जी के मरजी के बिना? कुहासा के चलते ढ़ेर गाड़ियन के रेल प्रशासन रद्द कर देले रहे ओह दिन। हमनी के गाड़ी कहीं तेज, कहीं धीरे-धीरे, हॉले-हॉले लाहे-लाहे अपना मने त नाहिए, प्रशासन के हिसाब से चलत रहे।

एक ओरी खेत में फुलाइल सरसों के हरियर-हरियर पतवन पर पियर-पियर दग-दग फुलाइल फूल, हिया के कतना जुरावत रहे, मन मोह लेत रहे, कातना सुन्दर छटा लागत रहे? दुसरका ओरी पहाड़न पर छावल कुहासा के मन भावन दृश्य भला केकरा के अपना ओर ना खींची? मन करत रहे कि निहारते रहीं पर हमार नजर रेलगाड़ी के रफ्तार से बढ़त जात रहे।

एक-ब-एक मन में एगो बात आइल कि चार सौ रू. कटी त कवनो बात नइखे बाकिर प्राचार्य महोदय के कोप-भाजन के शिकार जे बने के पड़ी? एकर हिसाब कइसे होई? चिन्ता सतावे लागल। कबहीं अपना ऊपर खीश आवत रहे कि एक दिन पहिलही हम काहे ना अइनी? आ कबही धेयान आवे कि हमार माई, मेहरारू, भाई आ बहिन सभे त चाहत रहे कि एक-दू दिन आउर रह जइत त कतना निमन लागित? बाकिर हम का कर सकत रहीं

''होइहें सोई जे राम रचि राखा ....।''

विधि के विधान के जान सकल बा? कि हम जान पाइब। एही चक्कर में हम रहीं, कबहीं एने झाँकत, कबहीं ओने, फेरू कबो आवे वाला स्टेशन के नाम पढ़त रहीं; तबले हमनी के गाड़ी वीणा जं. आ गइल आ हमार घड़ी रेलवे के भाषा में तेरह बजके पैंतालिस मिनट बजावत रहे।

हरदम मन में एकही बात आ जात रहे कि जातरा के शुरूये में जब वैशाली छोड़ के सप्तक्रान्ति एक्सप्रेस से गोरखपुर आवे के पड़ल रहे त हमार मन किच-किच हो गइल रहे। कवनो काम के श्रीगणेश निमन से होला त मन बुलंद रहेला। मरजी ऊपर वाला के .... हमरा लगे एके गो उपाय रहे कि दुरपदी अइसन आपन नइया के पतवार भगवान ऊपर छोड़ दीं, काहे कि चाह के भी हम कुछुओ ना कर सकत रहीं। चाहे हम कॉलेज खातीर केहु के, कहीं भी, कुछुओ कह दीं, भला हम कवना खेत के मुरई, उनका सोझा? वीणा जं. गाड़ी रूकल - त लागल, जइसे दउरत-दउरत केहु थहरा के बइठ गइल होखे? लोग नाश्ता-चाय-पान सिगरेट के चक्कर में रहे आ हम भनुआँ बस इहे सोंचत रहीं कि इज्जत

कइसे बाँची? मन बहलावे खातीर एक कप कॉफी लेके चुस्की लेत, एने-ओने देखत रहीं कि खुल गइल गप के गठरी। एगो आदमी जे हमरा बगल में बइठल रहलें, पुछलें कि हिन्दी, मराठी आ भोजपुरी में का अंतर बा, कइसन संबंध बा? दुसरका कहलें तीनों तीन राज्य के भाषा ह बाकिर तीनों के लिपि एकही ह। एगो साक्षर मेहरारू ई सोंचत कि ई लोग केतना बेवकूफ बा कि तीनों भाषा में अन्तर नइखें बुझात? ई मेहरारू हिन्दी से एम. ए. पास कइले रही जइसन की पुछला पर बतवली। हमरा से रहल ना गइल, हम ओकर हँसे-मुस्कुराये के कारण जाने के चहनी त ऊ कहली हिन्दी-हमनी के राष्ट्र भाषा ह, मराठी-महाराष्ट्र के स्थानीय भाषा ह, आ भोजपुरी गँवार लोगन के भाषा ह जइसन बिहार के लालू जी बोलेंल। भला हमरा से गारी सुन के कइसे रहल जाइत काहे कि हमनी के मातृभाषा त भोजपुरिये नु ह; जवना भाषा में रहीम, कबीर, तुलसीदास, बाबा धरणी दास, धरमदास, लक्ष्मी सखी से ले के महेन्द्र मिसिर आ भिखारी ठाकुर अइसन लोगन के रचना मिलत होखे, राजा भोज के धरती भोजपुर (आरा) से लागल लगभग बीस जिला (बिहार आ उत्तरप्रदेश के) में बोले जाये वाला भाषा जवन फिजी, सूडिनाम, मॉरिशस अइसन ना जाने कतना देशन में बोलल जाला, के इ मेहरारू गँवारन के भाषा, लालू के भाषा कहलस! जवन मिठास आ लोच भोजपुरी में बा ऊ दोसर कवनो भाषा में ना मिली बाकिर ई मराठी मेहरारू सरेआम हमनी भोजपुरिया के गारी देत रहे। एगो जमाना रहे जब मराठा बहादुरन के जिकिर हर जगे होत रहे आ आजो एगो जमाना बा कि बहादुर कम गारी देवे वाला पागल लोग आ पइसा-रूपया खातीर सब कुछ करे-करवावे वाला लोगन के महाराष्ट्र में अधिकता बा।

हम ओकरा से पूछलीं- श्रीमती जी, का रउआ जानत बानी की हिन्दी आ भोजपुरी जुड़वाँ बहन हई? बाकिर जब हिन्दी लिखे में गलती हो जाये त रउआ मराठी कहेनी; जइसे हिन्दी में ''नागपुर'' असही लिखाला आ मराठी में ''नागपूर'' हिन्दी में ''श्री मती'' असही लिखाला आ मराठी में ''श्रीमति'' अचरज त तब अधिक होई जब रउआ जानेम कि एगो टूथ पेस्ट कंपनी ''अेम'' असही लिखलस, हमनी त सपनों में ना सोंच सकतानी। हम खीसी हथिया नक्षत्र के पानी अइसन बरसत जात रहीं। हम फेरू पुछलीं-मैडम, हम लालू के भाषा बोले के चाहत बानी- का रउआ लोग जानत बानी की भइंस आ मेंहरारू में का अंतर होला? सभे हँसे लागल, ई सोंच के ई आदमी आखीर जानेके का चाहता? एगो आदमी कहे लगलें रउये बतायीं ना। हम साफ-साफ कहनी- मेहरारू लोगन में भँइस होखेली बाकिर भँइसन में मेहरारू लोग ना होला। सभे हँसे लागल काहे कि ऊ मेहरारू कवनो भँइस से कम मोट आ फदगोबर ना रही। हम फेरू पुछलीं- ''कमर'' आ ''कमरा'' में का अन्तर बा? सभे मजा ले-ले के हँसत रहे। एगो आदमी के निहोरा पर हमरे बतावे के पड़ल कि ''कमर'' जब बहुत मोटे हो जाला त ओमे आकार के मात्रा (।) यानी डंडा लगावे होला त ''कमरा'' हो जाला। का कहीं हम, सब कोई कइसे हँसत रहे आ मजा लेत रहे? आ ऊ मेहरारू आपन मुँह लटका के बइठ गइली, काहे कि मोटाई के हिसा से उनको कमर के कमर ना कह के कमरा कहल ही उचित होई। कइसनो कमरा के कइसनो दरवाजा में उनका कमर के घुसावे खातीर उनका कसरत त करहीं के पड़त होई। अब हमरा अमिताभ बच्चन के फिल्म ''लावारिस'' के गीत इयाद आवत रहे कि-

''जिसकी बीबी लंबी, उसका भी बड़ा भाग रे,
जिसकी बीबी मोटी, उसका भी बड़ा भाग रे,
पलंग पर लेटा दो गद्दे का क्या काम रे।''

हमनी समय के साथे-साथे राह भी तय कर चुकल रहीं आ गाड़ी रूकल भोपाल जं.। हमरा घड़ी

में साँझ के चार बजके पचास मिनट होत रहे। हमार कॉलेज पुष्पा नगर में रहे बाकिर हम कॉलेज गइल उचित ना समझनी काहे कि गइला से कवनो फायदा होखे के उम्मीद ना लउकत रहे। हमार जातरा त पुरा हो गइल बाकिर दोसरका दिन महाविद्यालय पहुँचते प्राचार्य महोदय के झेलहीं के परल साथ ही बिना पगार (तनखाह) के ई छुट्टी आउर बढ़ गइल, जवना से हमरा आर्थिक आ मानसिक दूनो रूप से कष्ट झेले के पड़ल। हमरा अइसन ना जाने कतना लोग जे प्राइवेट स्कूल-कॉलेजन आ संस्थानन में काम करत होई, जे रेलगाड़ियन से आवत जात होई, रेलवे मंत्रालय द्वारा देहल सुविधा फायदा उठावते होई, तारीफ भी करते होई, बाकिर गाड़ियन के आइल-गइल रोकल-रोकवावल, फिस प्लेटन के खोलल-खोलवावल, जूता-चप्पलन आ सामानन के चोरी, शयनयान-वातानुकुलित यानन में शराब पियल जइसन शिकायतन के हम ओही दिन ठान लेनी की जनहीत में इ बात उठाएम काहे कि एह पत्रिका के प्रधान संपादक जी डॉ. अनिल कुमार पाण्डेय जी आज रेलवे मेत्रालय के ही एगो लमहर पद डी. जी. , रेल मंत्रालय पर विराजमान बानी; आ जहाँ ले हो सकी ए से जनता के मुक्ति दिलायम। साथ हीं हम ओह रात के सोंचते-सोंचत सुत गइल रहीं कि बहुत खुशी होइत जब कवनो गाड़ी रोज भोपाल-वीणा-कटनी-मिर्जापुर-वाराणसी-छपरा मुजफ्फर के राह जाइत आ आइत। भोपाल से छपरा-मुजफ्फरपुर जाए के सीधा एके गो गाड़ी बा जे हफ्ता में एक दिन आ चेन्नई से आवेवाला के जगहो ना मिलेला। कतना दुःख होला भोजपुरिया भाई लोगन के बनारस, बलिया-छपरा जाये में।

(डॉ. पी. एस. सिन्हा)

ब्याख्याता होम्यो॰ रिपर्टरी विभाग

शासकीय होम्योपैथिक चिकित्सा

महावि॰ एम॰ पी॰ नगर-१

भोपाल (म॰ प्र॰)

पृष्ठ-67 का शेष भाग

मूल :

हिरण्यमयेन पात्रेन
सत्यस्या विहित मुखम्

एकर अनुवाद देखीं-

हेमपात्र सुखभोग जगत के
झपले बा मुंह सत्यज्ञान के
भरम रहल बा ई जीवात्मा
एह, असत के सत्य जान के

जच्छगीत अउरी गीता के भोजपुरी में अनुवाद अतना सुलझल आ सरस बा कि का कहल जाव ओकर दशम स्कन्ध ओह बीच रासपंचाध्यायी अउरी ओहमें मणिमाला अइसन टंकल गोपी गीत के प्राण कहल जाला। अइसन का कठिन संदर्भ के जवना के बारे में समीक्षक लोग के राय बा ''विद्यावतां भागवते परीक्षा'' भोजपुरी में पद्यानुवाद करके कविवर भुवनेश्वर प्रसाद जी भागवत में विवेचित ''भगवताँ का करीब पहुंच गइल बानी। बहुत जल्दी अभिज्ञान शाकुन्तलम के भोजपुरी अनुवाद आउर गोपी गीत प्रकाशित रूप में अपने सभे का सामने आयी। सांच पूंछी त गोपी लोग रस के अलौकिक धारा अइसन प्रवाहित हो के कलुष, विकार के धोये में समर्थ बा। पूरा अनावृत भइला पर ही देह धर्म, लोकलाज के तेआग कइला पर ही परम तत्त्व कृष्ण से नजदीकी संभव बा। प्रेम के प्रगाढ़ रूप में अइला पर बस खाली उहे रह जाला। ''जित देखो तित स्याम मयी है।''

अइसने अवस्था उपलब्ध भइला पर जीव का ब्रह्म के संयोग होला। गोपी अउरी कृष्ण एकरे प्रतीक बा। गोपी गीत में कवि के शब्द देखल जाव। गोपी का धरातल पर कृष्ण के पहुंचल अपना आप में विरल बा। कविवर भुवनेश्वर प्रसाद जी के पारखी नजर देखीं-

''घर के दुर्जय मोह काटि के
कइलू विमल प्रेम हमरा से
करबू तू ही उरिन दया करि
तवे मुकुत होखब तोहरा से'' (इति)

प्रो. बच्चू पाण्डेय (छपरा)